भगत कबीर – सबद २७

बिनु सत सती होइ कैसे नारि ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२८

बिनु सत सती होइ कैसे नारि ॥
पंडित देखहु रिदै बीचारि ॥१॥
प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥
जब लगु रसु तब लगु नही नेहु ॥१॥ रहाउ ॥
साहनि सतु करै जीअ अपनै ॥
सो रमये कउ मिलै न सुपनै ॥२॥
तनु मनु धनु गृहु सउपि सरीरु ॥
सोई सुहागनि कहै कबीरु ॥३॥२३॥

सार: नैतिकता वास्तविक जीवन की नींव है। इसके बिना, हमारे विचारों, शब्दों और कर्मों में सामंजस्य नहीं रहता जिससे हम स्वयं से दूर हो सकते हैं। यह तालमेल की कमी हमारे आत्म-सम्मान को कम करती है और समझौते के दिखावे के पीछे हमारी असली पहचान को छिपा देती है। यह दर्शाता है कि कैसे लगाव हमें भौतिकवाद और बाहरी लोगों की स्वीकृति से बांध सकता है जबकि वियोग हमें मुक्ति दिलाता है। अपने वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए हिम्मत और अपने इरादों पर विचार करने के संकल्प की ज़रूरत होती है, न कि अपना मूल्य तय करने के लिए वस्तुओं पर निर्भर रहने की। इसलिए, गरिमा, पूर्णता और स्वयं को सदा स्वीकार करने के लिए नैतिकता बहुत आवश्यक है।

बिनु सत सती होइ कैसे नारि ॥
वास्तविकता के बिना, कोई व्यक्ति सच में वफ़ादार कैसे बन सकता है? इससे पता चलता है कि नैतिकता हमारे अस्तित्व की नींव है, इसके बिना, हम अपने असली स्वरूप को अपना नहीं पाते और न ही उसका मूल्य कर पाते हैं।

पंडित देखहु रिदै बीचारि ॥१॥

हे विद्वान, अपने अंतर्मन में झाँको और विचार करो। यह आत्म-निरीक्षण और समझ की ओर इशारा करता है जहाँ बुद्धि ग्रंथों के विश्लेषण से हटकर आंतरिक उद्देश्यों और विचारों की जाँच करती है। (१)

प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥

सच्चे प्रेम के बिना, सच्चा बंधन कैसे गहरा हो सकता है? इससे पता चलता है कि ज्ञान और समझ से जुड़ाव केवल रीति-रिवाजों और जानकारी से कहीं आगे है, यह आंतरिक खोज है जो गहन समझ और आत्मीयता को विकसित करती है।

जब लगु रसु तब लगु नही नेहु ॥१॥ रहाउ ॥

जब तक इंद्रियों के सुख की चाहत बनी रहती है तब तक सच्चा प्रेम नहीं हो सकता। यह अंतर को उजागर करता है, एक तरफ़ लगाव जो हमें उपभोग से बाँधता है और दूसरी ओर मोह का त्याग जो वास्तविक स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है। (१)(विराम)

साहनि सतु करै जीअ अपनै ॥

लोग भौतिक भ्रम को ही सच मानते हैं। यह ग़लत सोच को दिखाता है जो अहं के कारण अपनी गहराई खो देती है और ग़लत धारणाएं पैदा कर लेती है।

सो रमये कउ मिलै न सुपनै ॥२॥

ऐसे व्यक्ति को सर्वव्यापी सत्ता का अनुभव स्वप्न में भी नहीं होता। यह अज्ञानता की उस रुकावट को दिखाता है जो हमें अपने वास्तविक स्वरूप को समझने से रोकती है। (२)

तनु मनु धनु गृहु सउपि सरीरु ॥
अपने शरीर, मन, धन, घर और इंद्रियों को समर्पित कर दें। यह हमारी पहचान के नश्वर पहलुओं को पूरे दिल से सौंपने का निमंत्रण है जिससे हम प्रकृति के शाश्वत नियमों के साथ जुड़ सकें।

सोई सुहागनि कहै कबीरु ॥३॥२३॥
कबीर कहते हैं कि वही सौभाग्यशाली और गुणी हैं। यह बताता है कि जो लोग भौतिक वस्तुओं और इंद्रियों के सुख से परे जीवन के असली अर्थ को समझने की कोशिश करते हैं, वही धन्य हैं। (३)(२३)

तत्त्व: भगत कबीर के अनुसार, सचमुच भाग्यशाली वह लोग हैं जिनका आंतरिक जीवन नेक और गुणी है। उनका सौभाग्य, भौतिक सुख-सुविधाओं से नहीं बल्कि उस अंतरात्मा से मिलता है जो केवल वस्तुओं और इंद्रियों के सुख से परे जीवन के असली सार को समझने की कोशिश करती है। उन्हें यह आशीर्वाद उस आंतरिक स्पष्टता से मिलता है जिससे वह अपनी पहचान के क्षणभंगुर पहलुओं को छोड़कर प्रकृति के शाश्वत नियमों के साथ स्वयं को जोड़ पाते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com